संगीत परिभाषा Inter एवं Part - I

वर्ण

गाने की प्रत्यक्ष क्रिया को वर्ण कहा जाता है। वर्ण चार प्रकार के होते हैं। स्थाई, अस्थाई, अवरोही, संचारी।

स्थायी वर्ण :- एक ही स्वर को बार-बार ठहर-ठहर कर बोलने या गाने की क्रिया को स्थाई वर्ण कहते हैं। जैसे:- सासा, सासा, रेरेरेरे, गगगग स्थाई का अर्थ ठहरा हुआ होता है।

आरोही वर्ण :- नीचे स्वर से उपर के स्वर तक चढ़ने की क्रिया को आरोही वर्ण कहते हैं। जैसे- सारेगम

अवरोही वर्ण :- ऊँचे स्वर से नीचें के स्वरों पर आने की क्रिया को अवरोही वर्ण कहते हैं। जैसे:- सांनिधपमगा

संचारी वर्ण :- जब स्थाई, आरोही तथा अवरोही इन तीनो स्वरों की मिलावट कर उलट पुलट करने की क्रिया को कहा जाता

अलंकार

नियमित रचना अथवा विशिष्ट स्वर- समुदाय को अलंकार कहते हैं इन्हे पलटा भी कहा जाता है। स्वर का शीघ्र ज्ञान होने के लिये ही अलंकार का प्रयोग किया जाता है। अलंकार का अर्थ होता है आभूषण या गहना यानी जिसे लगाने से रागों की सुन्दरता बढ़ जाये यह स्थायी, आरोही और अवरोही वर्णो पर आधारित रहता है।

जैसे - सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनि, धनिसां
सांनिध, निधप, धपम, पमग, मगरे गरेसा

ग्राम

ग्राम शब्द समूहवाची है। जिस प्रकार श्रुति स्वर समूह को स्वर कहा जाता है उसी प्रकार स्वर समूह को ग्राम कहा जाता है। जैसे - जब हम स्वरों मे 4, 3. 2, 4, 4, 3, 2 का रखेंगे तो हम इसे षडज ग्राम कहते हैं।

ग्राम तीन प्रकार के होते हैं। षड्ज ग्राम, गंधार ग्राम, मध्यम

Scanned with CamScanner

मुर्च्छना

एक सप्तक के सात (7) स्वरों के आरोह, अवरोह के क्रम को मुर्छना कहते हैं। जैसे यदि हम षड्ज ग्राम में सुर० का स्वर सा मान लें तो सा, रे, ग, म, प, ध और नि हमारी षड्ज ग्राम में सा स्वर की मुर्च्छना हुई। तीनों ग्राम में प्रत्येक की सात-सात मुर्च्छनायें होती हैं जो कुल मिलाकर 21 मुर्च्छनाएँ होती हैं।

गमक

जब आन्दोलित स्वर पर बल देकर उसको प्रयोग में लाया जाता है तो उसको 'गमक' कहते हैं। प्राचीन शास्त्र के अनुसार:-
" स्वरस्य कम्पो गमकः "। श्रोतु चित्त सुखावहः॥
अर्थात स्वरों को हिलाने को गमक कहते हैं। ग्रंथो में गमक के 15 प्रकार बताये गये हैं।

खटका

खटका को जमजमा भी कहते हैं। इसका प्रयोग अधिकांश तंत्रवादन में होता है। खटका को प्रयोग के रूप में करने के लिये चार या उससे अधिक स्वरों का वृत जैसा बनाते हुये उसे द्रुत गति से गाया बजाया जाता है। जैसे-रेसा निसा या गरेसारे। या सारे निसा या निसा रेसा इसे लिखने के लिये कोष्टक द्वारा दर्शाया जाता है। जैसे-(सा)। खटका का प्रयोग कुशल गायक ही कर पाते हैं।

मुर्की

जिस तरह से खटका में चार या इससे अधिक स्वरों का वृत बनता है तथा तेजी से कहा जाता है उसी प्रकार मुर्की में केवल तीन स्वरों का वृत बनता है जिसमें मूल स्वर के पहले और बाद के स्वर को लेने के बाद मूल स्वर को लिया जाता है। जैसे- धमप या मधप आदि।

EXPT. NO. | NAME: [redacted]

संगीत

प्रश्न - 1. राग विहाग का परिचय दें।

उत्तर :- यह राग श्रृंगार - रस प्रधान है। इसमें सब स्वर शुद्ध लगते हैं।

दोहा दोऊ मध्यम आरु शुद्ध स्वर, चढ़त रि ध को त्याग,
ग नि वादी संवादी त, जानत राग बिहाग

थाट — खमाज
जाति — औडव - सम्पूर्ण
वादी — गान्धार
संवादी — निषाद
समय — रात्रि का दूसरा प्रहर
आरोह — नि सा ग म प नि सां
अवरोह — सां नि ध प म प ग म गरे सा
पकड़ — नि सा, ग म प, ग म ग, रे सा।

स्थायी में स्वर लिपि —

स्थायी

सतगुरु दीन दयाल पूरणब्रह्म कृपाल।

गम पसां	नि ऽ पप	पम गम	पऽगम गसा	निसा गम	गम
सत गुरु	दीऽ नद	याऽ ऽल	पूऽऽऽ रन	ब्रऽ ह्मक	पा
4	X	0	2	0	3

अन्तरा -

ब्रह्मा विष्णु महेश्वर त्रिगुण विषय के सार ।।

गम बस	निऽ निनि	सांऽ सांसां	सांग सांनि	पऽ पमेगम	गऽ ऽ[illegible]
ब्रऽ ह्मा	विऽ ष्णुम	हेऽ श्वर	त्रिगु णवि	षय केऽऽऽ	साऽ [illegible]
4	x	0	2	0	3

राग विहाग का सरगम

स्थायी -

नि सा मग	प - नि सां	नि - प -	ग म
प - ग म	ग - सा -	प - नि नि	सा - [illegible]
0	3	x	2

अंतरा —

ग - ग म	प - नि नि	सां - सां -	सां [illegible]
नि प नि सां	नि ध प -	प - ग म	ग रे
0	3	x	2

EXPT. NO. NAME: [illegible] संगीत Page No.: 03

प्रश्न 2. राग भैरव से अपना परिचय दें।

उत्तर — यह प्रातः काल का संधि प्रकाश राग है, क्योंकि यह सुबह और रात की संधि बेला में गाया एवं बजाया जाता है। अतः यह गंभीर प्रकृति का राग है।

दोहा — भैरव कोमल ऋषभ धैवत, तीव्र गांध[ार]
त्रिषाद।

धैवत वादी सुर कहो, तासु ऋषभ संव[ादी]

थाट — भैरव
जाति — सम्पूर्ण
वादी — धैवत
संवादी — ऋषभ
समय — प्रातः काल
आरोह — सा रे॒ ग म प ध॒ नि सां।
अवरोह — सा नि ध॒ प म ग रे॒ सा।
पकड़ — ध॒ प; प म रे॒ रे॒ सा।

स्थायी
प्रातः भये जागो रघुराई।
मुनिजन द्वारे देत दोहाई॥

ध॒ - प म	प - म -	ग - ग म	रे॒ -
[illegible]	[illegible]	गौ - र धु	रा -